INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान लोक सेवा आयोग
अजमेर

LATEST EDITION

राजस्थान
REVENUE OFFICER
ग्रेड-2nd
& EXECUTIVE OFFICER ग्रेड- IVth
(R.P.S.C.)

HANDWRITTEN NOTES

भाग -2 राजस्थान भूगोल + भारत का संविधान

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान

REVENUE OFFICER
(– 2ND)
GRADE &
EXECUTIVE OFFICER
(GRADE - IVTH)

भाग – 2

राजस्थान का भूगोल + भारत का संविधान

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**RPSC Executive Officer / Revenue Officer**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**RPSC Executive Officer / Revenue Officer**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 8233195718

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/x3seet

Online order करें - https://bit.ly/eo-ro-notes

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम (2022)

राजस्थान का भूगोल

1. प्रमुख भू - आकृतिक प्रदेश एवं उनकी विशेषताएं 1
2. जलवायु की विशेषताएं 17
3. प्रमुख नदियाँ एवं झीलें 29
4. प्राकृतिक वनस्पति एवं मृदा 55
5. प्रमुख फसलें 72
6. प्रमुख उद्योग 87
7. प्रमुख सिंचाई परियोजनाएँ एवं जल संरक्षण तकनीकें 91
8. जनसंख्या-वृद्धि, घनत्व, साक्षरता, लिंगानुपात एवं प्रमुख जनजातियाँ 100
9. ऊर्जा संसाधन-परम्परागत एवं गैर परम्परागत 116
10. जैव विविधता एवं इनका संरक्षण 130
11. पर्यटन स्थल एवं परिपथ 136
12. खनिज सम्पदाऐं 156

भारतीय संविधान

1. संविधान सभा एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 173
2. भारतीय संविधान की विशेषताएँ 180
3. संविधान संशोधन 185
4. उद्धेशिका (प्रस्तावना) 193
5. मौलिक अधिकार (मूल अधिकार) 199

6. नीति निदेशक तत्व 211
7. मूल कर्तव्य 215
8. राष्ट्रपति 222
9. प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद् 247
10. भारतीय संसद 256
11. उच्चतम न्यायालय और न्यायिक पुनर्विलोकन 269
12. निर्वाचन आयोग 277
13. नियंत्रक एवं (अनुच्छेद - 148 -151) महालेखा परीक्षक 281
14. नीति आयोग 284
15. केंद्रीय सतर्कता आयोग 287
16. लोकपाल 293
17. केंद्रीय सूचना आयोग 297
18. राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग 303
19. भारत में लोकतांत्रिक राजनीति 305
20. गठबंधन सरकारें 311
21. राष्ट्रीय एकीकरण 316

अध्याय – I

प्रमुख भू – आकृतिक प्रदेश एवं उनकी विशेषताएं

नोटः- *प्रिय पाठकों जैसा कि आपको ज्ञात है कि राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है। इस विशाल राज्य में रेगिस्तान, नदियाँ, पर्वत एवं पहाडियाँ, पठार अलग - अलग क्षेत्रों में पाये जाते है । इनकी वजह से राजस्थान को चार भौतिक प्रदेशों में बाँटा गया है-*

1. *पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश – वह क्षेत्र जहाँ पर रेगिस्तान पाया जाता हैं*
2. *अरावली पर्वतमाला - वह क्षेत्र जहाँ पर अरावली पर्वतमाला का विस्तार है।*
3. *पूर्वी मैदानी प्रदेश- वह क्षेत्र जहाँ पर अधिकांश* ***दोमट व जलोढ़ मिट्टी*** *पाई जाती हैं*
4. *दक्षिणी - पूर्वी पठारी प्रदेश - वह क्षेत्र जहाँ पर अधिकांश मात्रा में* ***काली मिट्टी*** *पाई जाती है, इस क्षेत्र को* ***हाड़ौती का पठार*** *भी कहते है।*

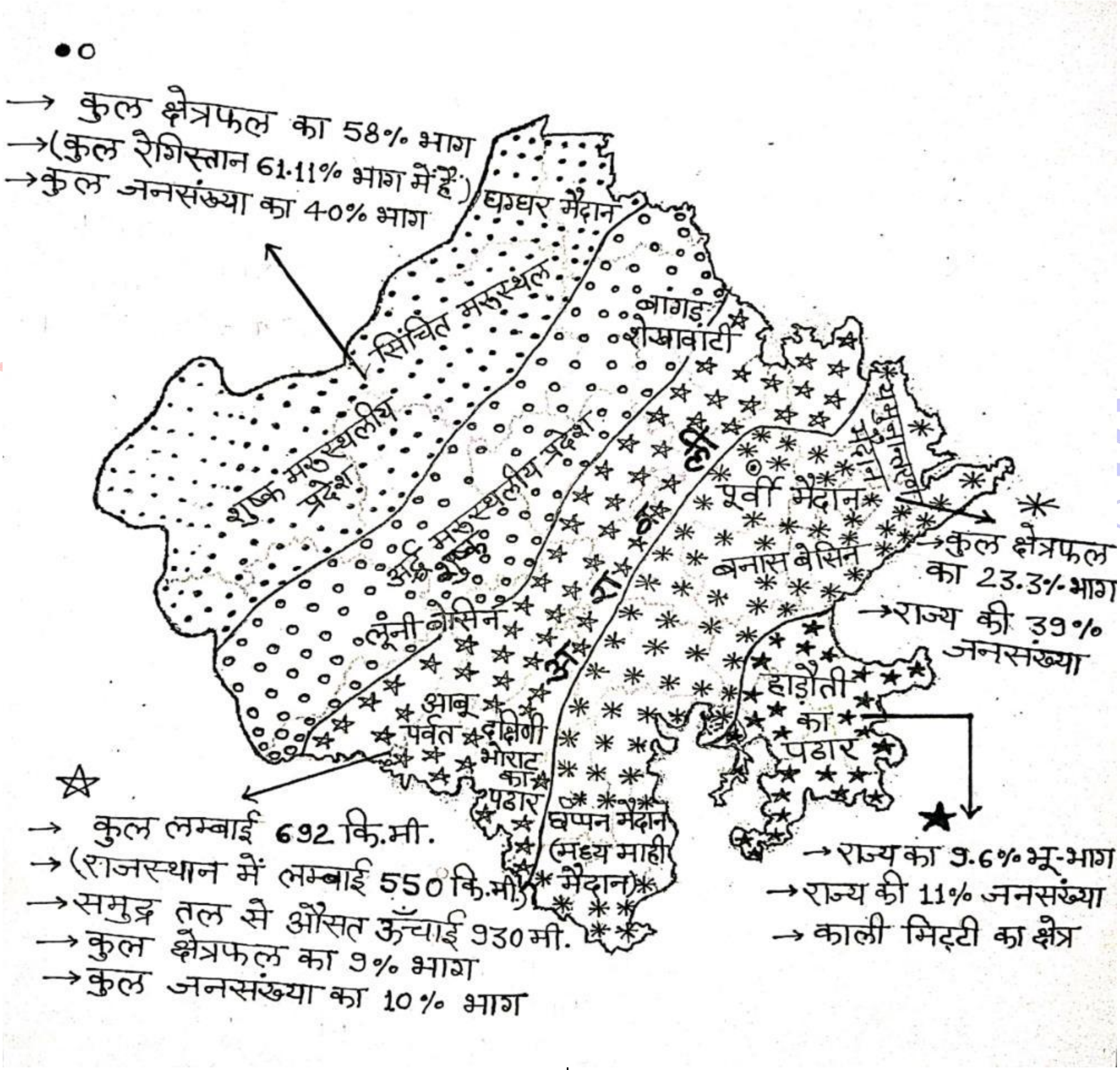

प्रिय छात्रों, इन चारों प्रदेशों का विस्तृत वर्णन इस प्रकार है-

- ***पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेशः-***

जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि राजस्थान का पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र टेथिस सागर का अवशेष है, और अरावली क्षेत्र गोंडवाना लैंड का हिस्सा है।

पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश का सामान्य परिचय :-

वर्तमान में रेगिस्तान का विस्तार राज्य के कुल 61.11 प्रतिशत हिस्से पर है।

नोटः- पहले ये क्षेत्र केवल 58 प्रतिशत भाग पर ही सीमित था, लेकिन वर्तमान में अरावली पर्वतमाला के कटी – फटी होने के कारण मरुस्थल का विस्तार पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ रहा है।

अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में कुल 12 जिले स्थित है, उनमें से **12 जिलों में रेगिस्तान का विस्तार** है । यह जिले निम्न प्रकार है-

1. बीकानेर संभाग - बीकानेर, चुरु, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर
2. जोधपुर संभाग - जोधुपर, जैसलमेर, जालौर, बाड़मेर, पाली (अपवाद- सिरोही)
3. शेखावाटी क्षेत्र - सीकर, झुंझुनू
4. अजमेर संभाग – नागौर

नोटः – राज्य के **सिरोही जिले में मरुस्थल का विस्तार नहीं है** अर्थात् अरावली के पश्चिम में स्थित **13 जिलों में से सिरोही एक मात्र ऐसा** जिला है, जो मरुस्थलीय जिलों की श्रेणी में शामिल नहीं है।

- **थार का रेगिस्तान** राजस्थान के उत्तर-पश्चिम भाग और पाकिस्तान में सिंध तथा पंजाब तक फैला है।
- यह **उत्तर – पश्चिम में 644 किमी॰ लम्बा और 360 किमी॰ चौड़ा है** ।
- इस का सामान्य ढाल **उत्तर – पूर्व से दक्षिण – पश्चिम** की ओर है ।
- मरुस्थल का **ऊँचा उठा हुआ उत्तर -पूर्वी भाग 'थली'तथा दक्षिण-पश्चिम भाग नीचे का 'तली** 'कहलाता है।

इस मरुस्थलीय क्षेत्र में राज्य की कुल **जनसंख्या का लगभग 40** प्रतिशत हिस्सा निवास करता है।

यह **विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला मरुस्थल** है तथा इसके अलावा यह विश्व में सर्वाधिक जैव विविधता वाला मरुस्थल भी है।

प्रश्न.1 भारत के थार मरुस्थल का कितना भाग राजस्थान में है? (RAS - 2016)

A. 40 प्रतिशत **B. 60 प्रतिशत**

C. 80 प्रतिशत **D. 90 प्रतिशत**

उत्तर - B

- थार के मरुस्थल की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ है, कि यह **विश्व का एक मात्र** ऐसा मरुस्थल है, जिसके निर्माण में **दक्षिण पश्चिम मानसूनी हवाओं का मुख्य योगदान** है।
- थार का मरुस्थल भारतीय उपमहाद्वीप में ऋतु चक्र को भी नियंत्रित करता है ।
- ग्रीष्म काल में तेज गर्मी के कारण इस प्रदेश में न्यून वायु दाब केन्द्र विकसित हो जाता है। जो दक्षिण - पश्चिमी मानसूनी हवाओं को आकर्षित करता है। यह हवायें सम्पूर्ण प्रायद्वीप में वर्षा करती है ।
- भारतीय उपमहाद्वीप में मानसून को आकर्षित करने में इस मरुस्थल की उपस्थिति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

इस क्षेत्र में शुष्क एवं अत्यंत विषम जलवायु पाई जाती है और तापमान गर्मियों में अत्यधिक (49° C तक) तथा सर्दियों में न्यूनतम (3° C तक) रहता है।

आँकल जीवाश्म पार्क, जलोद्भिद तलछट व लिग्नाइट, खनिज तेल इत्यादि से इस तथ्य की पुष्ठि होती है, कि **थार का मरुस्थल 'पर्माकार्बोनिफेरस युग'** में टेथिस सागर का हिस्सा था।

नोटः-मरुस्थलीकरण का मूल कारण :-

मरुस्थलीकरण की समस्या सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है। विश्व की कुल जनसंख्या का छठवाँ हिस्सा मरुस्थलीकरण की समस्या से प्रभावित है।

सन् 1952 में"Symposia on Indian Desert" का आयोजन किया गया जिसमें थार के मरुस्थल की उत्पत्ति पूर्व में इसका विस्तार आदि पर विस्तृत चर्चा की गई है।

क्या होता है मरुस्थलीकरण?

- उपजाऊ एवं अमरुस्थलीय भूमि का क्रमिक रूप शुष्क प्रदेश अथवा मरुस्थल में परिवर्तित हो जाने की प्रक्रिया ही मरुस्थलीकरण है ।

- मरुस्थलीकरण प्रकृति की परिघटना है जो ***जलवायवीय परिवर्तन व दोष पूर्ण भूमि उपयोग के कारण होती है।***
- यह क्रम वृद्धि परिघटना है , जिसमें मानव द्वारा भूमि उपयोग पर दबाव के कारण परिवर्तन होने से परितंत्र का अवनयन होता है।

मरुस्थलीकरण का सबसे महत्वपूर्ण कारण-

भूमि का अविवेकी उपयोग

पशुचारन

निरंतर वर्षा में कमी

संसाधनों का अति दोहन

जनसंख्या वृद्धि इत्यादि।

थार का मरुस्थल 'ग्रेट पेलियो आर्कटिक अफ़्रीका' मरुस्थल का ही पूर्वी भाग है।

थार के मरुस्थल में स्थित प्रमुख उद्यान 'राष्ट्रीय मरु उद्यान' है।

मरुभूमि राष्ट्रीय उद्यान

राज्य का मरुस्थल उष्ण मरुस्थल की श्रेणी में आता है ।

इस क्षेत्र की प्रमुख फसलें बाजरा, मोठ, ग्वार, इत्यादि है तथा ***प्रमुख नदी 'लूनी'*** है तथा प्रमुख नहर 'इंदिरा गाँधी 'नहर हैं

इस क्षेत्र में तीन प्रकार का मरुस्थल पाया जाता हैं

1. इर्ग 2. हम्मादा 3. रैग

- ***रेतीले मरुस्थल को 'इर्ग' कहा जाता है।***
- ***पथरीले मरुस्थल को हम्मादा*** कहा जाता है इसका विस्तार जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर व जालौर तक है।
- ऐसा मरुस्थल ***जिसमें रेत व पत्थर दोनों पाए जाते हैं,*** अर्थात् ***मिश्रित मरुस्थल को ' रैग' कहा जाता है।*** यह जैसलमेर के निकट रामगढ़ व लोद्रवा क्षेत्रों में पाया जाता है।

प्रसिद्ध जन्तु वैज्ञानिक डॉ. ईश्वर प्रकाश ने कहा है कि राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्र को मरु क्षेत्र नहीं कहकर ***'रुक्ष क्षेत्र'*** कहा जाए क्योंकि यहाँ पर पर्याप्त मात्रा में जैव विविधता पाई जाती है।

नोटः- जोधपुर राज्य का एकमात्र ऐसा जिला है जिसमें ***सभी प्रकार के बालूका स्तूप*** पाये जाते है। ***तथा सर्वाधिक बालूका स्तूप जैसलमेर जिले में पाए जाते हैं।***

❖ ***<u>मरुस्थल में पाई जाने वाली प्रमख संरचनाए तथा शब्दावली</u>***

1. लाठी सीरीज :- पाकिस्तान देश के सहारे (पास में) ***पोकरण से मोहनगढ़ तक की क्षेत्र*** लाठी सारिज के नाम से जाना जाता है।

2007 में काजरी के वैज्ञानिकों द्वारा यह स्पष्ट किया गया कि इस क्षेत्र में ***80 मीटर लम्बी तथा 60 मीटर चौड़ी एक भू-गर्भिक जल पट्टी*** का विस्तार है।

इस क्षेत्र में धामण, करड, अजाण, ***लीलोण, सेवण घास मुख्य रूप*** से पायी जाती है।

नोटः- सेवण घास का ***कटा हुआ रूप लीलण*** कहलाता है।

राज्य का राज्य पक्षी ***गोडावण अपने अण्डे सेवण घास पर देता*** है । इसी कारण ***सेवण घास को गोडावण पक्षी की प्रजनन सम्पति*** कहा जाता है।

इसी क्षेत्र में जैसलमेर जिले की सम तहसील में चन्दन गाँव में एक ***मीठे पानी का जल स्त्रोत*** (कुआँ) है। जिस से प्रति घन्टे में लगभग 2.30 लाख लीटर मीठा पानी निकलता है । इसे ***चन्दन नलकूप या 'थार का घड़ा'*** भी कहा जाता है। इस कुँए का ***वास्तविक नाम 'चौहान'*** है।

2. पीवणाः- इस क्षेत्र में पाये जाने वाला जहरीला सर्प जो डंक नहीं मारता बल्कि रात्रि में सोते हुए व्यक्ति को श्वांस के द्वारा जहर देकर मारता है।

3. मावठ / महावठ / शीतकालीन वर्षा :- पश्चिमी विक्षोभ तथा भूमध्य सागरीय चक्रवातों से ***शीतकाल में होने वाली वर्षा जो रबी की फसल के लिए उपयोगी*** होती है ***मावठ कहलाती*** है।

4. नेहड़ :- लगभग 100 वर्ष पूर्व राज्य के जालौर तथा बाड़मेर जिले में ***समुद्र का जल आकर ठहरता*** था । अतः जालौर व बाड़मेर जिले का क्षेत्र नेहड़ कहलाता था । नेहड़ का शाब्दिक अर्थ होता है 'समुद्र का जल'।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

मरुस्थलीय क्षेत्र में जल संचय के तरीके

1. **आगोरः-** प्राचीन काल में मरुस्थलीय क्षेत्र में वर्षा के **जल का संचय करने के लिये टांके** बनाये जाते थे, जिन्हें आगोर कहा जाता था ।
2. **खड़ीनः- कृषि के लिए वर्षा जल का संचय** करना। यह पालीवाल ब्राह्मणों द्वारा शुरु की गई । मुख्यतः जैसलमेर के उत्तरी भाग में पाई जाती है ।
3. **नाड़ी :-** मानव के **दैनिक आवश्यकताओं** तथा **पशुपालन के लिए वर्षा का जल संचय करना।**
4. **टोबाः-** नाड़ी को कृत्रिम रूप से और अधिक गहरा करना टोबा कहलाता है।
5. **बेरीः-** खड़ीन तथा नाड़ी के पास जो जल का रिसाव होता था । उस जल को पुनः उपयोग में लाने हेतु इनके आस - पास छोट - छोटे कुएँ बना दिये जाते थे जिन्हें बेरी कहा जाता है।
6. **प्लायाः-** सामान्य भाषा में गहरे पानी की बड़ी **खारे पानी के झीलों को** प्लाया कहा जाता है । वर्षा काल में वर्षा का जल मरुस्थल में बने बड़े - बड़े गर्तो में आने के बाद वहाँ की मिट्टी से लवणता का प्राप्त कर खारा हो जाता है । ऐसे बडे गर्तो को प्लाया कहा जाता है। सर्वाधिक प्लाया झीलें जैसलमेर में है।
7. **रन / टाट / ढांढ :-** मरुस्थल में रेत के टीले बन जाते हैं उनके बीच वर्षा का जल भर जाने से जो अस्थाई झीलें बन जाती हैं तथा मिट्टी से लवणता को प्राप्त कर खारा हो जाता है। ऐसे छोटे - छोटे गढ्ढे रन / टाट / ढांढ कहे जाते है।
8. **मिली / पोखर :-** छोटे - छोटे ऐसे गढ्ढे जिन में वर्षा का मीठा जल आकर ठहरता है तल्ली या पोखर कहलाते है।

महत्वपूर्ण तथ्य

खादर :- चंबल बेसिन में 5 से 30 मीटर गहरी खड्ड युक्त बीहड़ भूमि को स्थानीय भाषा में खादर कहते है।

धोरे :- रेगिस्तान में रेत के बड़े - बड़े टीले, जिनकी आकृति लहरदार होती हैं ।

बरखान :- रेगिस्तान में रेत के **अर्द्धचंद्राकार बड़े - बड़े** टीले। जो एक स्थान से दूसरे स्थान **गतिशील रहते हैं ।**

लघु मरुस्थल :- महान थार मरुस्थल का पूर्वी भाग जो कच्छ से बीकानेर तक फैला है ।

लूनी बेसिनः- अजमेर के दक्षिण पश्चिम से अरावली श्रेणी के पश्चिम में विस्तृत लूनी नदी का प्रवाह क्षेत्र है ।

बीहड़ भूमि :- चंबल नदी के द्वारा मिट्टी के भारी कटाव के कारण प्रवाह क्षेत्र में बन गई गहरी घाटियां व टीले ।

राजस्थान व मध्य प्रदेश के सीमावर्ती जिले :- भिंड, मुरैना, धौलपुर आदि में ऐसी बहुत सी कंदराएँ (Revines) हैं ।

धरियन :- जैसलमेर जिले के ऐसे भू-भाग, जहाँ आबादी लगभग नगन्य हैं, स्थानांतरित बालूका स्तूप को स्थानीय भाषा में इस नाम से पुकारते हैं ।

वागड़ प्रदेश :- बाँसवाड़ा व डूंगरपुर के पहाड़ी क्षेत्र को स्थानीय भाषा में वागड़ कहते हैं ।

बांगर प्रदेश :- यह अरावली पर्वत एवं पश्चिमी मरुस्थल के मध्य का भाग है जो मुख्यतः झुंझुनूं, सीकर व नागौर जिले में विस्तृत है ।

छप्पन के मैदान :- बाँसवाड़ा व प्रतापगढ़ के बीच माही बेसिन में **56 ग्राम समूहों** (56 नदी - नालों का प्रवाह क्षेत्र) का क्षेत्र ।

पीड़मांट :- अरावली श्रेणी में देवगढ़ के समीप स्थित प्रथक निर्जन ।

मैदान :- पहाड़िया जिनके उच्च भू-भाग टीलेनुमा हैं ।

बीजासण का पहाड़ :- मांडलगढ़ के कस्बे के पास स्थित है ।

विंध्याचल पर्वत :- राजस्थान के दक्षिण-पूर्व में तथा मध्य प्रदेश में स्थित है ।

भभूल्या :- राजस्थान में छोटे क्षेत्र में उत्पन्न वायु भंवर (चक्रवात) को स्थानीय भाषा में भभूल्या कहते हैं ।

पुरवइयाँ :- बंगाल की खाड़ी से आने वाली **मानसूनी हवाओं को** राजस्थान के स्थानीय भाषा में पुरवइयाँ (पुरवाई) कहते हैं ।

शुष्क मरुस्थल

उत्तर - पश्चिम मरुस्थल का वह क्षेत्र जहाँ वनस्पति नगण्य या नाम मात्र की पाई जाती है, तथा वर्षा बहुत ही कम मात्रा में होती है। इस क्षेत्र में **वर्षा 0 से 25 से.मी.** तक होती है।

इस क्षेत्र में **कांटेदार झाड़ियां** बहुतायात में पायी जाती है।

1. बालूका स्तूप युक्त प्रदेश :- उत्तर पश्चिम मरुस्थल का वह क्षेत्र जहाँ धोरे / टीले या टीबों का निर्माण होता है। यह राजस्थान के कुल मरुस्थल का ५८.५ प्रतिशत है ।

बालूका स्तूप युक्त प्रदेश :-

बालूका स्तूप युक्त प्रदेश के अन्तर्गत राज्य की अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित चारों जिले श्रीगंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर तथा चुरु व पश्चिमी नागौर एवं जोधपुर जिला शामिल है।

2. बालूका स्तूप मुक्त प्रदेश:- उत्तर - पश्चिम मरुस्थल का वह क्षेत्र जहाँ धोरों का निर्माण नहीं होता है अर्थात् वह क्षेत्र जो चट्टानों से अच्छादित है बालूका स्तूप मुक्त प्रदेश है। यह राजस्थान के कुल मरुस्थल का ४१.५ प्रतिशत भाग है ।

इस क्षेत्र में **जुरासिक काल के जीवाश्म के अवशेष पाए जाते है** इसका उदाहरण **जैसलमेर जिले स्थित आँकल गाँव में 'वुड फॉसिल पार्क' है।**

नोट:- राज्य का **सबसे न्यूनतम वर्षा** वाला स्थान **सम गाँव जैसलमेर** जिले में स्थित है तथा यहीं गाँव (सम गाँव) राज्य का न्यूनतम वनस्पति या **वनस्पति रहित क्षेत्र है।**

इस क्षेत्र में जैसलमेर जिले की पोकरण तहसील, बाड़मेर जिले की छप्पन की पहाडियाँ, फलोदी तहसील का कुछ क्षेत्र इस प्रदेश के अन्तर्गत आता है।

1. **बालूका स्तूप** :-

- पवन द्वारा जब मिट्टी का निक्षेपण या जमाव होता है, तो बनने वाली संरचना बालूका स्तूप कहलाती है। जिन्हें टीले या टीबे भी कहा जाता है। तथा जैसलमेर की स्थानीय भाषा मे धरियन कहा जाता है।

बालूका स्तूप के प्रकार :-

1. **बरखान :- पवन**

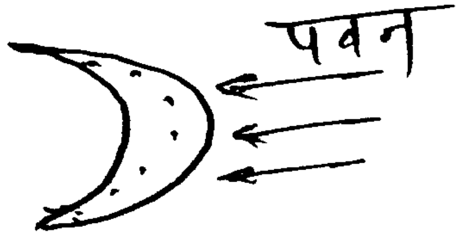

- यह अर्द्धचंद्राकार आकृति का होता है इसका विस्तार शेखावटी क्षेत्र में जाता है, जिसमें सर्वाधिक चूरु जिले में है।
- यह सर्वाधिक नुकसानदायी एवं सर्वाधिक अस्थिर प्रकृति के होते हैं।

2. **अनुप्रस्थ :- पवन**

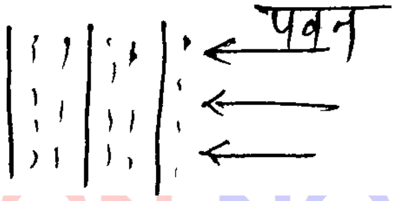

- ये हवा के लम्बवत् अर्थात् हवा के साथ समकोण पर बनने वाले स्तूप या टीले होते हैं।
- इनका विस्तार बाड़मेर तथा जोधपुर में पाया जाता है।

3. **अनुदैर्ध्य / रेखीय :- पवन**

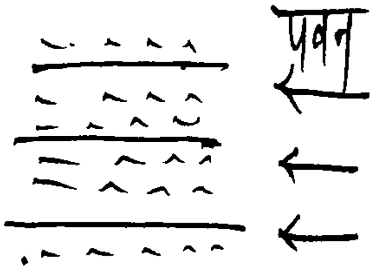

- ये हवा की दिशा के समानांतर बनने वाले स्तूप / टीले होते हैं। इनका विस्तार जैसलमेर जिले में मुख्यत: पाया जाता है।

2. ***राजस्थान में अरावली पर्वतमाला का विस्तार सिरोही जिले के "खेड ब्रह्मा" से झुंझुनूं जिले के "सिंघाना" (खेतड़ी) तक तथा दक्षिण की ओर अलवर तक है। राजस्थान में अरावली की कुल लंबाई 550 किलो मीटर है।*** *आइए समझते हैं इस अरावली पर्वतमाला को निम्न मानचित्र के द्वारा –*

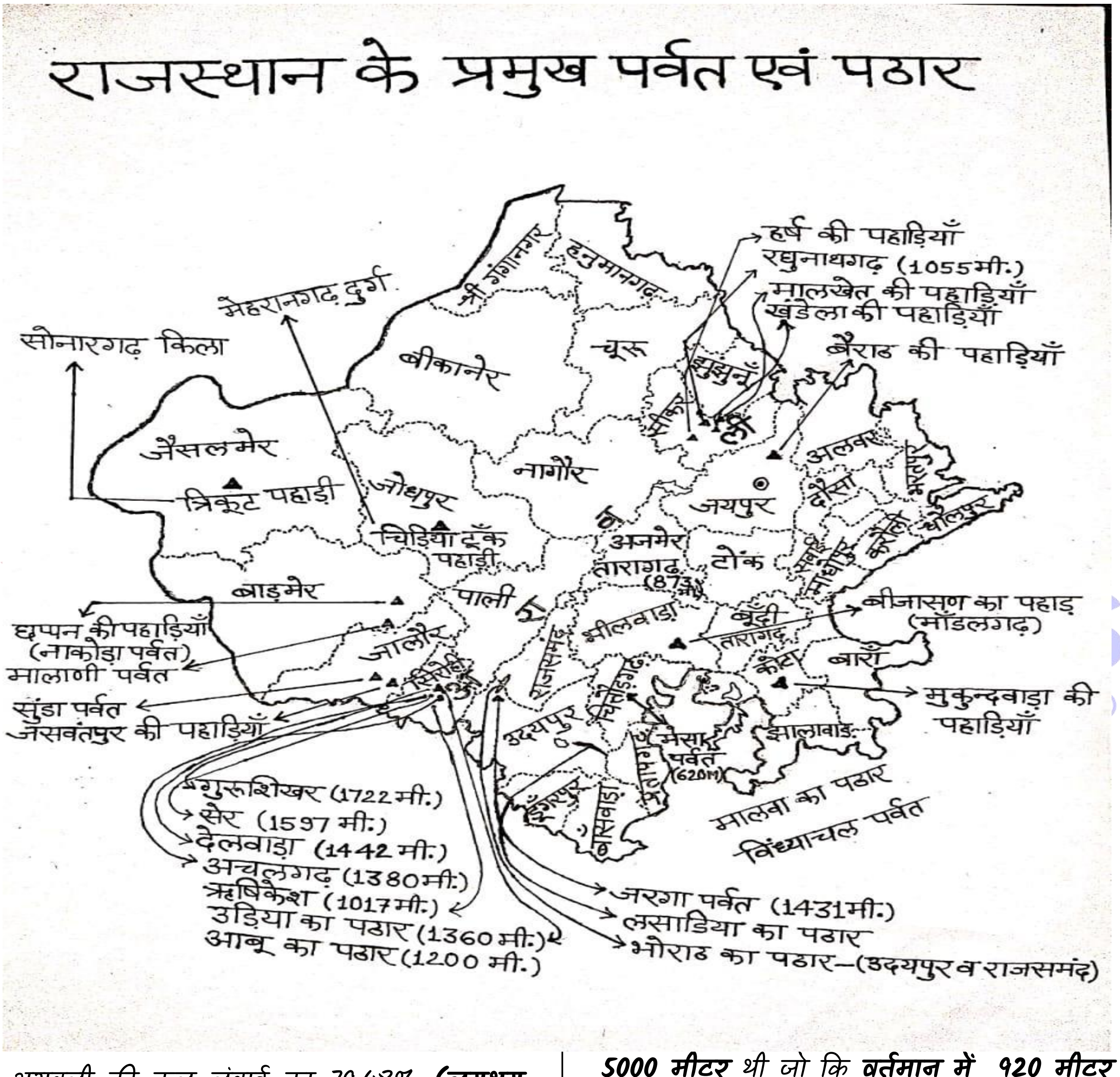

4. *अरावली की कुल लंबाई का 79.48%* ***(लगभग 80%) भाग राजस्थान में*** *स्थित है जिसका* ***आकार एक वाद्ययंत्र "तानपुरे"*** *के समान है। अरावली पर्वतमाला की तुलना अमेरिका मे स्थित अल्पेशियन पर्वतों से की जाती है जो कि लगभग 60 से 55 करोड़ वर्ष पुराने हैं।*

5. *उत्पत्ति के आधार पर अरावली पर्वतमाला एक* ***वलित पर्वत*** *(जिसका विकास हो रहा है) तथा* ***वर्तमान में एक अवशिष्ट पर्वत है। इसकी औसत ऊँचाई पहले 5000 मीटर*** *थी जो कि* ***वर्तमान में 920 मीटर समुद्र तल से*** *है।*

6. *अरावली पर्वतमाला का विस्तार राज्य के 17 जिलों में है यह राज्य के लगभग बीच में स्थित है इसलिए राज्य को दो भागों में विभाजित करती है पूर्वी भाग व दक्षिणी भाग।*

7. *अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में 13 जिले आते हैं जिनमें से 12 में मरुस्थल है और एक जिला ऐसा है जो कि सिरोही है जिसमें मरुस्थल नहीं है*

- हनुमानगढ़ के बड़ोपोल गाँव को बर्ड सेंचुरी घोषित किया जा चुका है।
- राज्य का सबसे ठंडा एवं गर्म जिला चूरु है।
- फ्लोराइड युक्त जल पट्टी का विस्तार "कुबड़ पट्टी" कहलाता है।
- नागौर के पठार क्षेत्र में "हरे कबूतर" पाए जाते हैं।
- अरावली पर्वतमाला विश्व की प्राचीनतम वलित पर्वत श्रृंखला है।
- अरावली पर्वतमाला का राज्य में सर्वाधिक विस्तार उदयपुर जिले में तथा न्यूनतम विस्तार अजमेर जिले में है।
- राज्य का सबसे ऊँचा पठार "उड़िया का पठार" है, जो सिरोही जिले में स्थित है।
- अरावली की सबसे ऊँची चोटी गुरु शिखर है, जिसकी ऊँचाई 1722 मीटर है। जो सिरोही जिले में स्थित है।
- राजस्थान का "कल्पवृक्ष महुआ "तथा आदिवासियों का "हरा सोना बांस" को कहा जाता है।
- अरावली को राजस्थान का योजना प्रदेश भी कहा जाता है।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. भारत की सबसे प्राचीन पर्वत श्रृंखला है -
   A. हिमालय B. अरावली
   C. विंध्याचल D. सतपुड़ा
   उत्तर – B

2. निम्न में से सत्य कथन हैं -
   1. राजस्थान का पहला रोप वे भीनमाल (जालौर) में संचालित है।
   2. राजस्थान का दूसरा रूप में उदयपुर में संचालित है।

   A. केवल (i)
   B. केवल (ii)
   C. (i) व (ii) दोनों
   D. न तो (i) न ही (ii)
   उत्तर – C

3. राजस्थान में महान सीमा भ्रंश कहा स्थित है?
   A. बूंदी व सवाई माधोपुर के मध्य
   B. कोटा व सवाई माधोपुर के मध्य
   C. झालावाड़ व कोटा के मध्य
   D. कोटा व बूंदी के मध्य
   उत्तर - A

4. राजस्थान का सबसे ऊँचा पठार कौनसा है
   A. भोराट का पठार B. लसाड़िया का पठार
   C. मेसा का पठार D. हाड़ौती का पठार
   उत्तर - A

5. घग्घर नदी के तल को स्थानीय भाषा में क्या कहते हैं?
   A. नदिया B. नाली
   C. नदी D. नहर
   उत्तर - B

6. जरगा पर्वत किस जिले में स्थित है?
   A. सिरोही B. उदयपुर
   C. अलवर D. अजमेर
   उत्तर - B

7. उदयपुर - राजसमंद क्षेत्र का सर्वोच्च शिखर है?
   A. जरगा B. कुम्भलगढ़
   C. लीलगढ़ D. नागरानी
   उत्तर - A

8. तोरावाटी की पहाड़ियाँ मुख्यतः किस क्षेत्र में विस्तृत है?
   A. शेखावाटी B. मध्य अरावली
   C. आबू D. अजमेर
   उत्तर – A

9. अरावली की निम्नलिखित पर्वत शिखरों को ऊँचाई के सही अवरोही क्रम हैं?
   A. कुम्भलगढ़ - जरगा - रघुनाथगढ़ - अचलगढ़
   B. जरगा - अचलगढ़ - कुम्भलगढ़ - रघुनाथगढ़
   C. अचलगढ़ - कुम्भलगढ़ - रघुनाथगढ़ - जरगा
   D. रघुनाथगढ़ - कुम्भलगढ़ - अचलगढ़ - जरगा
   उत्तर - A

10. शेखावाटी क्षेत्र में स्थानीय भाषा में कुँए को क्या कहते हैं?
    A. बावड़ी B. बेरा
    C. जोहड़ D. खूँ
    उत्तर - C

6. राजस्थान का कौनसा प्रदेश प्रमुख रूप से अलसी उत्पादक है ?

a. बागड़ b. हाड़ौती

c. घग्घर d. लूनी बेसिन

उत्तर - (b)

7. राजस्थान में 'मानसून का जुआ' किसे कहते हैं?

a. उद्योगों को b. व्यापार को

c. कृषि को d. कोई नहीं

उत्तर - (c)

8. माही कंचन और माही धवल किसकी किस्में हैं?

a. चावल b. गेहूँ

c. मक्का d. जौ

उत्तर - (c)

9. कौनसी तिलहन की फसल राजस्थान में खरीफ के मौसम में उत्पादित नहीं की जाती है?

a. मूंगफली b. तिल

c. सोयाबीन d. सरसों

उत्तर-(d)

10. आदिवासियों द्वारा स्थानान्तरित कृषि को कहाँ जाता है-

a. चिमाता b. दजिया

c. वालरा d. कोई नहीं

उत्तर - (c)

अध्याय – 6

प्रमुख उद्योग

वर्तमान समय में चीन सूती वस्त्र के उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान रखता है।

- सूती कपडों के लिए इंग्लैण्ड का मैनचेस्टर (Manchester) शहर प्रसिद्ध है ।
- शंघाई को चीन का मैनचेस्टर (Manchester) कहा जाता है ।
- जापान का मैनचेस्टर ओसाका को कहा जाता है।
- भारत का मैनचेस्टर अहमदाबाद को कहा जाता है ।
- उत्तरी भारत का मैनचेस्टर कानपुर को कहा जाता है ।
- दक्षिण भारत का मैनचेस्टर कोयम्बटुर को कहा जाता है ।

राजस्थान का सूती वस्त्र उद्योग

- राजस्थान का मैनचेस्टर भीलवाड़ा को कहा जाता है ।
- नवीन मेनचेस्टर के नाम से भिवाड़ी (अलवर) को जाना जाता है । कलकत्ता मे भारत की प्रथम सूती मील 1818 में खोली गई ।
- राजस्थान का सबसे प्राचीन एवं सुसंगठित उद्योग सूती वस्त्र उद्योग है ।
- राजस्थान की प्रथम सूती वस्त्र मिल 'दी कृष्णा मिल्स लिमिटेड' की स्थापना 1889 में सेठ दामोदर दास राठी व श्याम जी कृष्ण वर्मा ने ब्यावर में की
- 'दी कृष्णा मील ब्यावर' कार्यशील हथकरघों की दृष्टि से सबसे बडी सूती वस्व मिल है ।
- राजस्थान में सबसे बडी सूती वस्व मील 'उम्मेद मिल्स' पाली मे है राजस्थान अपने वर्तमान स्वरूप में । नवम्बर 1956 को आया, इस समय राज्य में 7 सूती वस्त्र मिले थी।
- वर्तमान में राज्य में 23 सूती वस्त्र मिलें स्थापित है । राज्य में सूती मिलों को तीन भागों मे विभाजित किया गया है

सार्वजनिक क्षेत्र की सूती मिलें

- एडवर्ड मिल्स (ब्यावर)1906
- श्री महालक्ष्मी मिल्स (ब्यावर) 1925
- श्री विजय कॉटन मिल्स (विजयनगर)

सहकारी क्षेत्र की मिले

- राजस्थान सहकारी कताई मिल लिमिटेड गुलाबपुरा (भीलवाडा) ।
- श्री गंगानगर सहकारी कताई मिल लि. हनुमानगढ़
- गंगापुर सहकारी कताई मिल लि. गगापुर (भीलवाड़ा) ।
- राजस्थान में निजी क्षेत्र में 17 मिलों की स्थापना की गई है । कंप्यूटर एडेड डिजाइन सैंटर भीलवाडा में स्थापित किया गया है ।

राजस्थान की प्रमुख सूती वस्त्र मिले

1. एडवर्ड मिल्स लिमिटेड ब्यावर
2. महालक्ष्मी मिल्स लिमिटेड ब्यावर
3. मेवाड़ टेक्सटाईल मिल्स भीलवाड़ा
4. महाराजा उम्मेद सिंह मिल्स लि. पाली
5. सार्दूल टेक्सटाइल मिल्स लि. श्रीगंगानगर
6. राजस्थान स्पिनिंग एण्ड जिनीविंग मिल्स भीलवाड़ा
7. आदित्य मिल्स किशनगढ़
8. उदयपुर कॉटन मिल्स उदयपुर
9. राजस्थान टेक्सटाइल मिल्स भवानी मण्डी
10. गंगापुर को ऑपरेटिव स्पिनिंग मिल्स गंगापुर
11. श्री गोयल इंडस्ट्रीज कोटा
12. सुदर्शन टेक्सटाइल्स कोटा
13. बाँसवाड़ा सिन्थेटिक्स बासवाड़ा
14. विजय कॉटन मिल्स विजयनगर
15. बाँसवाड़ा फेब्रिक्स बाँसवाड़ा

चीनी उद्योग

- राजस्थान में सर्वप्रथम चीनी मील चितौडगढ जिलें के भोपाल सागार नामक नगर में ' मेवाड़ शूगर मील ' के नाम से सन् 1932 मे निजी क्षेत्र में खोली गई । चीनी बनाने का दूसरा कारखाना सत् 1937 में गंगानगर मे गंगानगर शुगर मिल्स के नाम से प्रारंभ किया गया ।
- 1956 से 'गंगानगर शुगर मिल्स' सार्वजनिक क्षेत्र में आ गई है । चुकन्दर से चीनी बनाने के लिए श्रीगंगानगर शूगर मिल्स लिमिटेड में एक योजना 1968 में आरंभ की गई थी ।
- श्री गंगानगर शूगर मील को वर्तमान में करणपुर के कमीनपुरा गाँव में स्थापित किया जाएगा । दी गंगानगर शूगर मिल्स शराब बनाने का कार्य भी करती हैं । अजमेर, अटरू (बांरा) प्रतापगढ़ तथा जोंधपुर में भी इसके केन्द्र है ।रॉयल हेरिटेज लिकर, कैसर कस्तुरी ब्राण्ड गंगानगर शुगर मील की उच्च गुणवत्ता वाली शराब है ।

महत्वपूर्ण तथ्य

1965 में बूंदी जिलें के केशोरायपाटन में चीनी मील सहकारी क्षेत्र में स्थापित की गई । 1976 में उदयपुर में चीनी मील निजी क्षेत्र में स्थापित की गई चीनी उद्योग के उत्पादन व दक्षता में वृद्धि करने के उद्देश्य से विद्यमान कानूनों में परिवर्तन का सुझाव देने के लिए V C. महाजन समिति का गठन किया गया ।

सीमेंट उद्योग (Rajasthan me Cement Udyog)

- सीमेंट उत्पादन की दृष्टि से राजस्थान, भारत का एक अग्रणी राज्य है । राज्य में चितौडगढ जिला सीमेंट उद्योग के लिए सबसे अनुकूल जिला है । 1904 में सर्वप्रथम समुद्री सीपियों से सीमेंट बनाने का प्रयास मद्रास (चेन्नई) में किया गया था ।
- राज्य में सर्वप्रथम क्लीक निकसन् कम्पनी द्वारा 1915 में लाखेरी, बूंदी में सीमेंट संयंत्र स्थापित किया गया ।
- दक्षिण एशिया का सबसे बड़ा सीमेंट कारखाना ' जयपुर उद्योग लि . सवाई माधोपुर में स्थापित किया गया हैं, जो वर्तमान में बंद हैं । J.K. सीमेंट निम्बाहेड़ा का कारखाना सर्वाधिक सीमेंट का कारखाना है ।सबसे कम उत्पादन क्षमता वाला श्रीराम सीमेंट, श्री रामनगर कोटा का कारखाना है ।
- सीमेंट की " श्री सीमेंट कम्पनी ' जो की 'ब्यावर में स्थित है । यह उत्तरी भारत की सबसे बडी कम्पनी है ।

सफेद सीमेंट Rajasthan me White Cement

- सफेद सीमेंट का प्रथम उद्योग गोटन (नागौर) में स्थापित किया गया सफेद सीमेंट के दो कारखाने गोटन (नागौर) तथा एक कारखाना खारिया खंगार, जोधपुर में स्थापित किया गया है ।
- मांगरोल (चित्तौड़गढ़) में सफेद सीमेंट 'का चौथा कारखाना स्थापित किया गया है ।
- खारिया खंगार (जोधपुर) कारखाना राज्य में सफेद सीमेंट का सबसे बड़ा सीमेंट कारखाना बीडला कम्पनी द्वारा स्थापित हैं । राज्य का सीमेंट उत्पादन की दृष्टि से भारत में प्रथम स्थान है । पोर्टलेण्ट एवं पोंजलाना ये दोनों सीमेंट की विशिष्ट किस्मे है । पोर्टलैण्ड सीमेंट का उत्पादन DLF कम्पनी द्वारा किया जाता है ।
- राजस्थान में मिनी सीमेंट के कारखाने कोटपुतली, नीमकाथाना, हिंडोन सिटी, आबूरोड़ तथा बाँसवाड़ा में स्थापित किये गये है । ' मगलम सीमेंट संयंत्र ' मोडक (कोटा) में, 1982 में स्थापित किया गया ।
- सवाई माधोपुर जिलें में त्रिशूल छाप सीमेंट का निर्माण होता है । चितौडगढ में चेतक छाप सीमेंट का निर्माण होता हैं ।

काँच उद्योग

- राजस्थान सिलिका उत्पादन की दृष्टि से हरियाणा के बाद देश में दूसरे स्थान पर हैं । काँच उद्योग हेतु सीसा, सोडियम, सल्फेट, बालु मिट्टी सिलिका कच्चे माल के रूप प्रयुक्त होते है । राजस्थान के धौलपुर जिलें में काँच उद्योग सर्वाधिक फैला हुआ है ।
- ' दी हाई टेक्नीकल प्रोसीजन ग्लास वर्क्स ' धौलपुर में स्थित है । राज्य सरकार का यह उद्योग गंगानगर शुगर मील के लिए बोतल निर्माण करता है । वर्तमान में यह बंद है । ' धौलपुर ग्लास वर्क्स ' धौलपुर में निजी क्षेत्र का उपक्रम है ।
- सैम्कोर ग्लास इण्डस्ट्रीज ' कोटा मे स्थित है । इस उद्योग में सैमसंग कम्पनी द्वारा पिक्चर ट्यूब का निर्माण किया जाता है ।
- 'बॉश एण्ड लाम्ब लि.' कंपनी भिवाडी (अलवर) में स्थित है । इस फैक्ट्री में लेंस एवं चश्मो का निर्माण किया जाता है । सिरेमिक पार्क की स्थापना बीकानेर में की गई है ।

ऊन उद्योग

- राजस्थान में भारत की लगभग 16.7 प्रतिशत भेंड़े पाली जाती है । राजस्थान देश की लगभग 40 प्रतिशत ऊन उत्पादित करता है । ऊन उत्पादन में राज्य का देश में प्रथम स्थान है जबकि दूसरा स्थान कर्नाटक का है ।
- बीकानेर में एशिया की सबसे बडी ऊन मण्डी स्थापित है । ऊन विश्लेषण प्रयोगशाला बीकानेर में स्थित है । जोधपुर में केन्द्रीय ऊन बोर्ड स्थापित किया गया है ।
- विदेशी ऊन आयात-निर्यात केन्द्र कोटा में स्थित है । भेड ऊन का प्रशिक्षण संस्थान जयपुर में स्थित है । ऊन प्रोसैसिंग हाऊस की स्थापना भीलवाडा में की गई है ।
- कम्प्यूटर एडेड कारपेट डिजाइन सेंटर जयपुर में खोला गया है । 'गलीचा प्रशिक्षण केन्द्र' बीकानेर में खोला गया है । ऊनी कपड़े के धागे के 3 कारखाने भीलवाडा में है ।
- "वर्स्टेड स्पिनिंग मिल्स" लाडनूं में राजस्थान लघु उद्योग निगम का उपक्रम है ।

राज्य में कुल ऊन उद्योग की बडी इकाईयां निम्नलिखित प्रकार से है

- स्टेट वूलन मिल्स बीकानेर
- जोधपुर वूलन मिल्स जोधपुर
- वर्स्टेड स्पिनिंग मिल्स चूरू
- राजस्थान वूलन मिल्स बीकानेर

राज्य के शुष्क व अर्द्धशुष्क जिलों में ऊन का उत्पादन अधिक होता है ।

वनस्पति घी उद्योग

- राज्य मे सर्वप्रथम वनस्पति घी उद्योग की स्थापना सन् 1964 में भीलवाडा जिलें मे की गई ।
- राजस्थान में वनस्पति घी बनाने के 9 कारखाने हैं भीलवाडा जयपुर , टोंक , चितौडगढ , उदयपुर व गंगानगर आदि ।
- महाराजा वनस्पति घी और आमेर वनस्पति घी अच्छी साख वाला घी है ।
- निवाईं में केसरी वनस्पति और दुगाँपुरा में रोहिताश वनस्पति घी का उत्पादन किया जाता है।

(a) 1964 में　　(b) 1970 में

(c) 1968 में　　(d) 1966 में

उत्तर - (A)

7. सिरोही - उदयपुर - चित्तौड़ - कोटा - बारां राष्ट्रीय राजमार्ग का नया नंबर क्या है ?

(a) NH-21　　(b) NH -27

(c) NH -62　　(d) NH -76

उत्तर- (B)

8. राजस्थान में 'मुख्यमंत्री सड़क योजना' किस वर्ष में लागू की गई ?

(A) 2002　　(b) 2005

(C) 2007　　(d) 2010

उत्तर-(B)

9. स्वर्णिम चतुर्भुज योजना संबंधित है ?

(a) पर्यटन विभाग से　　(b) खनन विभाग से

(c) राष्ट्रीय राजमार्ग विकास से　(d) ऊर्जा विकास से

उत्तर - C

10. राज्य में किस वर्ष राज्य सड़क नीति की घोषणा की गई ?

(a) 1949　　(b) 1994

(c) 1998　　(d) 2001

उत्तर - B

अध्याय - 12

खनिज सम्पदाऐं

प्रिय छात्रों इस अध्याय के अंतर्गत हम राजस्थान में पाए जाने वाले प्रमुख खनिज संसाधनों का अध्ययन करेंगे सबसे पहले हम समझते हैं कि खनिज संसाधन किसे कहते हैं।

खनिज

- **खनिज :-** वे प्राकृतिक पदार्थ हैं जो कि भू-गर्भ से खनन क्रिया द्वारा बाहर निकाले जाते हैं। खनिज प्रमुखतया प्राकृतिक एवं रासायनिक पदार्थों के संयोग से निर्मित होते हैं।
- इनका निर्माण अजैविक प्रक्रियाओं के द्वारा होता है। सामान्य शब्दों में, वे सभी पदार्थ जो कि खनन द्वारा प्राप्त किए जाते हैं, खनिज कहलाते हैं।
- जैसे – लोहा, अभ्रक, कोयला, बॉक्साइट (जिससे एल्युमिनियम बनता है), नमक (पाकिस्तान व भारत के अनेक क्षेत्रों में खान से नमक निकाला जाता है), जस्ता, चूना पत्थर इत्यादि।
- ऐसे खनिज जिनमें धातु की मात्रा अधिक होती है तथा उनसे धातुओं का निष्कर्षण करना आसान होता है उन्हें अयस्क कहते हैं।

जैसे-

धातु	**अयस्क**
हेमेटाइट	लोहा
बॉक्साइट	एल्युमिनियम
गैलेना	सीसा
डोलोमाइट	मैग्नीशियम
सिडेराइट	लोहा
मेलाकाइट	तांबा

खनिजों के प्रकार

खनिज तीन प्रकार के होते हैं; धात्विक, अधात्विक और ऊर्जा खनिज।

धात्विक खनिज:

लौह धातु: लौह अयस्क, मैंगनीज, निकेल, आदि।

अलौहधातु: तांबा, लैड, टिन, बॉक्साइट, कोबाल्ट आदि।

बहुमूल्य खनिज: सोना, चाँदी, प्लेटिनम, आदि।

अधात्विक खनिज:

अभ्रक, लवण, पोटाश, सल्फर, ग्रेनाइट, चूना, पत्थर, संगमरमर, बलुआ, पत्थर, आदि।

ऊर्जा खनिज: कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस।

खनिज के भंडार:

- आग्नेय और रूपांतरित चट्टानों में : - इस प्रकार की चट्टानों में खनिजों के छोटे जमाव शिराओं के रूप में, और बड़े जमाव परत के रूप में पाये जाते हैं ।
- जब खनिज पिघली हुई या गैसीय अवस्था में होती है तो खनिज का निर्माण आग्नेय और रूपांतरित चट्टानों में होता है ।
- पिघली हुई या गैसीय अवस्था में खनिज दरारों से होते हुए भूमि की ऊपरी सतह तक पहुँच जाते हैं।

उदाहरण: टिन, जस्ता, लैड, आदि।

अवसादी चट्टानों में: - इस प्रकार की चट्टानों में खनिज परतों में पाये जाते है ।

1. मुख्यत: अधात्विक ऊर्जा खनिज पाए जाते हैं।

उदाहरण: कोयला, लौह अयस्क, जिप्सम, पोटाश लवण और सोडियम लवण, आदि।

धरातलीय चट्टानों के अपघटन के द्वारा: - जब अपरदन द्वारा शैलों के घुलनशील अवयव निकल जाते हैं तो बचे हुए अपशिष्ट में खनिज रह जाता है । बॉक्साइट का निर्माण इसी तरह से होता है।

जलोढ़ जमाव के रूप में : - इस प्रकार से बनने वाले खनिज नदी के बहाव द्वारा लाए जाते हैं और जमा होते हैं । इस प्रकार के खनिज रेतीली घाटी की तली और पहाड़ियों के आधार में पाए जाते हैं । ऐसे में वो खनिज मिलते हैं जिनका अपरदन जल द्वारा नहीं होता है । उदाहरण: सोना, चाँदी, टिन, प्लेटिनम, आदि।

महासागर के जल में: - समुद्र में पाए जाने वाले अधिकतर खनिज इतने विरल होते हैं कि इनका कोई आर्थिक महत्व नहीं होता है । लेकिन समुद्र के जल से साधारण नमक, मैग्नीशियम और ब्रोमीन निकाला जाता है।

राजस्थान में खनिज संसाधन –

प्रिय छात्रों राजस्थान में कई प्रकार के खनिज पाए जाते हैं।

- जैसा कि आपको पता है राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है यहाँ पाई जाने वाली अधिक विविधताओं के कारण यह राज्य खनिज संपदा की दृष्टि से एक संपन्न राज्य है । और इसी वजह से इसे "खनिजों का अजायबघर" भी कहा जाता है ।
- **खनिज भंडार की दृष्टि से राजस्थान का देश में झारखंड के बाद दूसरा स्थान आता है जबकि खनिज उत्पादन मूल्य की दृष्टि से झारखंड, मध्यप्रदेश, गुजरात, असम के बाद राजस्थान का पांचवा स्थान है ।** राजस्थान में देश का कुल खनन क्षेत्र का 5.7% क्षेत्रफल आता है । देश में **सर्वाधिक खाने राजस्थान में स्थित है ।** देश के कुल खनिज उत्पादन में राजस्थान का योगदान 22% है।
- राजस्थान में खनिज मुख्य रूप से अरावली में पाए जाते है । अत: इसे खनिजों का भण्डारगृह कहा जाता है ।

राजस्थान की भूमिका :-

भंडारण में	उत्पादन में	विविधता में	आय में
द्वितीय स्थान	द्वितीय स्थान	प्रथम स्थान	पाँचवा स्थान

(57 प्रकार के खनिज) 81 प्रकार के

राजस्थान में 81 प्रकार के खनिज पाए जाते हैं आइए जानते हैं वह कौन - कौन से खनिज यहाँ पाए जाते हैं।

1. ऐसे खनिज जिन पर राजस्थान का एकाधिकार है -

पन्ना, जास्पर, तामड़ा, वोलेस्टोनाइट

प्रश्न – 2. निम्नलिखित में से कौनसे खनिजों का राजस्थान लगभग अकेला उत्पादक राज्य है? (2018)

A. सीसा एवं जस्ता अयस्क

B. ताम्र अयस्क

C. वोलेस्टोनाइट

D. सेलेनाइट

a. A, एवं C **b. A, B एवं D**

c. A, B एवं C **d. A, B, C एवं D**

उत्तर – d

2. ऐसे खनिज जिनके उत्पादन में राजस्थान का प्रथम स्थान है -

जस्ता - 97%, फ्लोराइड 96%, **एस्बेस्टस** 96 %, रॉकफोस्फेट 95%, जिप्सम 94 % चूना पत्थर 94%, खड़िया मिट्टी 92%, घीया पत्थर 90%, चांदी 80%, मकराना (मार्बल) 75%, सीसा 75%, **फेल्सपार** 75%, टंगस्टन 75%, कैल्साइट 70%, फायर क्ले 65%, ईमारती पत्थर 60%, बेंटोनाइट 60%, कैडमियम 60%

3. वे खनिज जिनकी राजस्थान में कमी है - लोहा, कोयला, मैंगनीज, खनिज तेल, ग्रेफाइट

राजस्थान में पाए जाने वाले खनिजों को तीन प्रकारों में बांटा जा सकता है -

1. **धात्विक खनिज** – लौह अयस्क, मैंगनीज, टंगस्टन, सीसा, जस्ता, तांबा, चांदी इत्यादि।
2. **अधात्विक खनिज** - अभ्रक, एस्बेस्टस, फेल्सपार, बालुका मिट्टी, चूना पत्थर, पन्ना, तामड़ा इत्यादि।
3. **ईंधन** - कोयला, पेट्रोलियम, खनिज इत्यादि।

खनिजों की दृष्टि से राजस्थान में अरावली प्रदेश और पठारी प्रदेश काफी समृद्ध है।

- **धात्विक खनिज –**

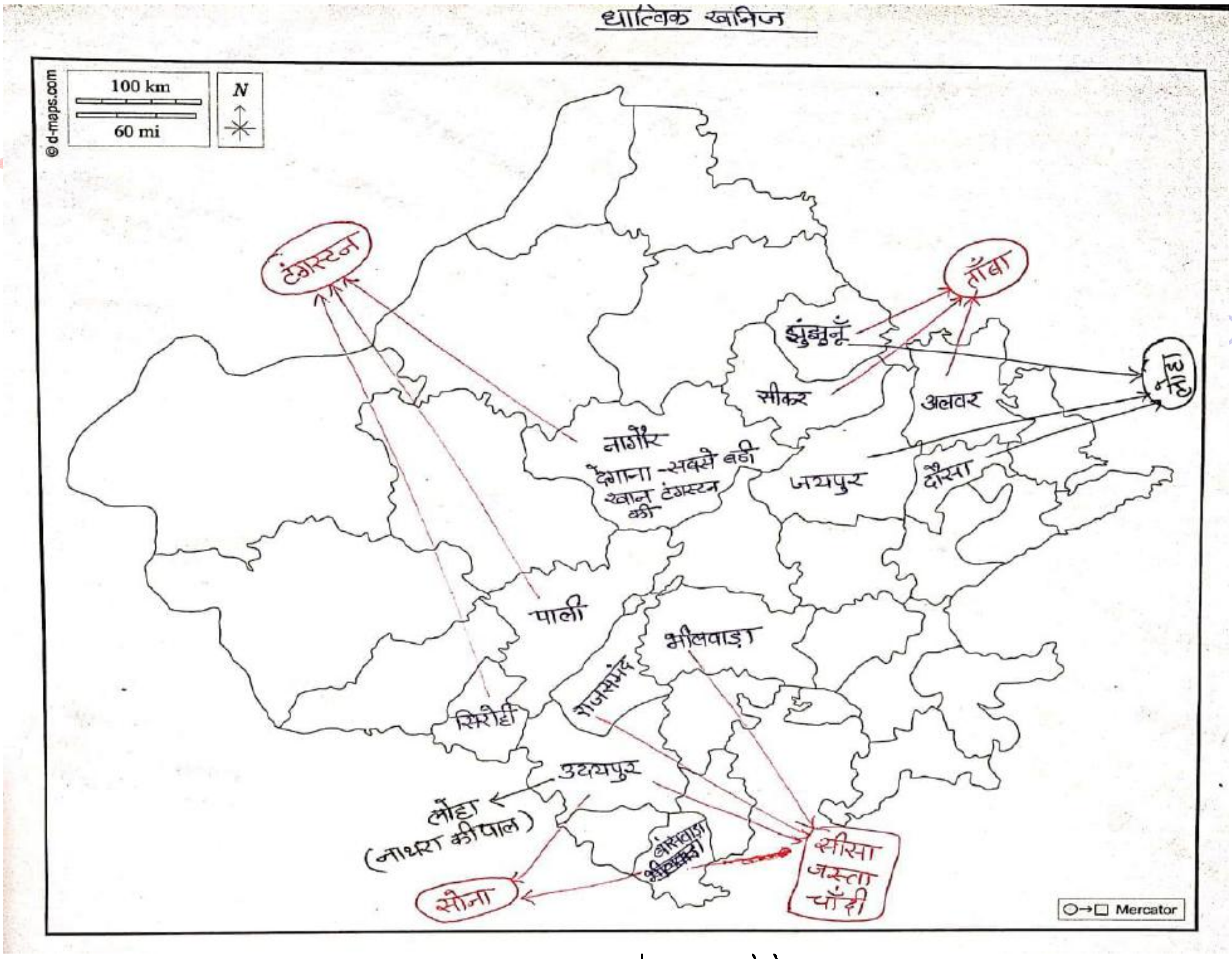

1. **लोहा** –राजस्थान में लोहा मुख्य रूप से अरावली के उत्तर – पूर्व एवं दक्षिण- पूर्व में पाया जाता है।

लौहा अयस्क चार प्रकार का होता है-

i. मैग्नेटाइट - 74 %

ii. हेमेटाइट - 65 %

iii. लिमोनाइट - 50 %

iv. सिडेराइट - 40%

- **देश में सबसे अधिक खाने राजस्थान राज्य में हैं।**
- **जेस्पार, वोलेस्टोनाइट, पन्ना और तामड़ा का देश में एकमात्र उत्पादक राज्य राजस्थान हैं।**
- झामरकोटड़ा, सलोपेट और वीरमानिया रॉक फॉस्फेट के प्रमुख खान क्षेत्र हैं।
- राज्य में संगमरमर का सबसे अधिक उत्पादन एवं संगमरमर की सबसे अधिक खानें राजसमन्द जिले में हैं । मकराना (नागौर)में विश्व प्रसिद्ध संगमरमर निकलता है।
- ब्रिटेन की माइन्स मैनेजमेन्ट लिमिटेड कम्पनी ने अजमेर से नाथ द्वारा तक पन्ने की नई पट्टी का पता लगाया है।
- **प्रतापगढ़ जिले में केसरपुरा के निकट हीरों के भण्डारों का पता चला है।**
- राजस्थान में जैसलमेर का संगमरमर जूरैसिक काल का है, जबकि शेष राज्य में, यह कैम्ब्रियन
पर्वत की शैलों में मिलता है।
- रत्न खनिज बहुधा आग्नेय शैल के स्थान में पाए जाते हैं । इनमें पैग्मेराइट शैल मुख्य हैं -पुखराज, पन्ना, एनिथिस्ट आदि रत्न पैग्मेराइट शैल के साथ मिलते हैं।
- गार्नेट रत्न का उत्पादन देश में केवल राजस्थान में ही होता है।
- लाइमस्टोन, रॉक फॉस्फेट व जिप्सम का उत्पादन व विपणन राजस्थान राज्य खनन विकास निगम (R.S.M.D.C) द्वारा किया जाता है।
- राजस्थान के बाँसवाड़ा जिले में सोने की खोज का कार्य चल रहा है।
- राजस्थान के जैसलमेर जिले के रामगढ़ स्थान पर प्राकृतिक गैस आधारित ऊर्जा परियोजना प्रारंभ की गई है।
- राजस्थान के सीकर जिले में सलादीपुर में पाइराइट्स के भंडारों का उपयोग करके सल्फ्यूरिक एसिड उत्पन्न करने का कार्य प्रारंभ किया जा रहा है जिसका उपयोग उर्वरक उद्योग में किया जाएगा।
- **राजस्थान के बरसिंहसर में लिग्नाइट-आधारित ताप बिजली घर का निर्माण किया गया है।**
- राजस्थान के अजमेर व राजगढ़ की खानों में लीथियम की कुछ मात्रा प्राप्त हुआ है ।
- **राजस्थान के उदयपुर तथा बाँसवाड़ा जिले में यूरेनियम की खोज की जा रही है।**
- राजस्थान में तेल व प्राकृतिक गैस की खोज पोलैण्ड की प्रसिद्ध कम्पनी "पोलिश ऑयल एण्ड गैस कम्पनी" के सहयोग से "एस्सार ऑयल" द्वारा बीकानेर, श्रीगंगानगर व चूरू जिलों में की जा रही है।
- 6 जुलाई, 1990 को डांडेवाला (जैसलमेर) में प्राकृतिक गैस का भंडार प्राप्त हुआ है।
- राजस्थान के प्रतापगढ़ जिले के केसरपुरा गाँव के समीप हीरे के भंडार प्राप्त हुए हैं।
- राजस्थान के चित्तौड़गढ़ जिले में ब्रिटेन की सहायता से "सुपर जिंक स्मेल्टर" की स्थापना भारत सरकार ने की थी।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. खो दरीबा क्षेत्र में किस खनिज का भंडार है?

A. बेरिलियम B. लौह अयस्क
C. ताँबा मैंगनीज D. मैंगनीज

उत्तर – C

2. निम्न में से किस क्षेत्र से सीसा जस्ता नहीं निकाला जाता।

A. जावर B. आमेट
C. रामपुरा - दरीबा D. अगूचा - गुलाबपुरा

उत्तर – B

3. राजस्थान में ताँबे की खान कहाँ है?

A. जावर B. गोटन
C. खेतड़ी D. अगूचा

उत्तर - C

4.फेल्सपार का सर्वाधिक उत्पादन किस जिले में होता है?

A. भीलवाड़ा B. जयपुर

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

C. अजमेर D. कोटा

उत्तर - C

5. राजस्थान में टंगस्टन के भंडार किस जिले में हैं?

A. भीलवाड़ा B. जयपुर

C. अजमेर D. कोटा

उत्तर - C

6. राजस्थान के किस जिले में तेल और प्राकृतिक गैस के भंडार की संभावनाएँ अच्छी हैं?

A. बाड़मेर B. जैसलमेर

C. जालौर D. श्रीगंगानगर

उत्तर – B

7. बाड़मेर में तेल की खुदाई करने वाली कंपनी है-

A. ONGC B. Indian Oil

C. केयर्न एनर्जी D. हिंदुस्तान पैट्रोलियम

उत्तर - C

8. निम्न में से कौनसा राजस्थान के तेल क्षेत्र का नाम नहीं है?

A. ऐश्वर्या B. सरस्वती

C. लक्ष्मी D. रागेश्वरी

उत्तर - C

9. बाड़मेर- सांचौर बेसिन प्रसिद्ध है?

A. पेट्रोलियम हेतु B. खनिज पदार्थ हेतु

C. बायो गैस हेतु D. जिप्सम हेतु

उत्तर – A

10. राजस्थान में बेरिलियम उत्पादक दो प्रमुख जिले हैं?

A. उदयपुर और जयपुर

B. अलवर और झुंझुनूं

C. नागौर और पाली

D. सिरोही और डूंगरपुर

उत्तर - A

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 3

संविधान संशोधन

- भारत के संविधान में संशोधन करने का उद्देश्य देश के मौलिक कानून या सर्वोच्च कानून को बदलावों के माध्यम से और मजबूत करना है। संविधान के भाग XX में संशोधन की प्रक्रिया दी गई है। (अनुच्छेद 368)
- संविधान संशोधन की प्रक्रिया न तो ब्रिटेन के समान लचीली है और न ही यूएसए के समान कठोर। यह दोनों का सम्मिलित रूप है। **संसद सविधान में संशोधन तो कर सकती है लेकिन मूल ढांचे से जुड़े प्रावधानों को संशोधित नहीं कर सकती है।** (केशवानन्द भारती वाद, 1973)
- संविधान संशोधन के प्रावधान दक्षिण अफ्रीका के संविधान से लिए गए हैं।
- अनुच्छेद 368 को 24वें और 42वें संशोधन द्वारा क्रमशः 1971 और 1976 में संशोधित किया गया है।

महत्त्वपूर्ण निर्णय : केशवानन्द भारती वाद, 1973 में सर्वोच्च न्यायालय ने यह निर्णय दिया कि संसद संविधान के मूल ढांचे" में परिवर्तन नहीं कर सकती है।

संविधान संशोधन की प्रक्रिया (अनुच्छेद 368)

विधेयक की प्रस्तुति	संविधान संशोधन विधेयक को संसद के किसी भी सदन में प्रस्तुत किया जा सकता है।
कौन प्रस्तुत कर सकता है ?	इसे मंत्री या किसी भी निजी सदस्य द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है।
राष्ट्रपति की भूमिका	ऐसे विधेयक को प्रस्तुत करने के लिए राष्ट्रपति की पूर्व अनुमति की आवश्यकता नहीं होती है।
पारित करने के लिए आवश्यक बहुमत	विशेष बहुमत सदन के कुल सदस्यों का बहुमत + सदन में उपस्थित और मतदान करने वाले सदस्यों का 2/3 बहुमत । (50% + उपस्थित और मतदान करने वाले सदस्यों का 2/3)
सदन द्वारा पारित किया जाना	दोनों सदनों द्वारा विधेयक को विशेष बहुमत से पारित किया जाना आवश्यक है ।
संयुक्त अधिवेशन (अनुच्छेद 108)	संविधान संशोधन विधेयक पर सदनों की संयुक्त बैठक का प्रावधान नहीं है।
संघात्मक प्रावधानों में संशोधन	विशेष बहुमत + आधे राज्यों की विधानमंडल के साधारण बहुमत से संस्तुति
विधेयक को स्वीकृति देने में राष्ट्रपति की भूमिका	24वां संविधान संशोधन- इसके द्वारा अनुच्छेद 368 में संशोधन करके यह प्रावधान साथ ही यह भी प्रावधान किया गया कि राष्ट्रपति दोनों सदनों से पारित संविधान संशोधन विधेयक पर हस्ताक्षर करने के लिए बाध्य है। साथ ही संसद, संविधान के किसी भी प्रावधान को संशोधित कर सकती है।

संविधान संशोधन में राज्य	राज्य विधानमंडल में संविधान संशोधन विधेयक प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है।

विधानमंडल की भूमिका	

साधारण बहुमत	**विशेष बहुमत**	**संसद का विशेष बहुमत और आधे राज्यों की सहमति**
• प्रत्येक सदन में उपस्थित एवं सदन के कुल सदस्यों का बहुमत मतदान करने वाले सदस्यों का बहुमत • यह एक सामान्य कानून पारित करने के ही समान है। • ऐसे संशोधनों को अनुच्छेद 368 के • तहत किया गया संशोधन नहीं माना जाता है। • उदाहरण: हाल ही में सर्वोच्च नयायालय के न्यायाधीशों की संख्या 31 से बढ़ाकर 34 की गयी है।	• सदन के कुल सदस्यों का बहुमत (रिक्तियाँ और अनुपस्थितों सहित) और प्रत्येक सदन के उपस्थित एवं मतदान करने वाले सदस्यों का दो-तिहाई बहुमत • उदाहरण: 103 संशोधन के माध्यम से आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों के लिए 10% आरक्षण।	• विशेष बहुमत + आधे राज्यों की विधानमंडल के साधारण बहुमत से संस्तुति । • ज्यादातर संघीय प्रावधानों को इसी प्रक्रिया द्वारा संशोधित किया जाता है। • उदाहरण: जीएसटी से संबंधित 101वां संशोधन

प्रश्न. निम्न वक्तव्यों पर विचार कर सही उत्तर का चयन कीजिए -

कथन (A) - सरकारिया कमीशन की सिफारिश के अनुसार अनुच्छेद 356 का प्रयोग कम से कम होना चाहिए

कारण (R) - जिन राजनीतिक दलों ने केन्द्र में सरकार बनाई उन्होंने अनुच्छेद 356 का दुरुपयोग किया।

कूट -

a. **(A) और (R) दोनों सही है एवं (R) A की सही व्याख्या नहीं करता है।**

b. **(A) और (R) दोनों सही है एवं (R) A की सही व्याख्या करता है।**

c. **(A) सही है, परन्तु (R) गलत है।**

d. **(A) गलत है, परन्तु (R) सही है।**

उत्तर - B

<u>विभिन्न प्रावधान और आवश्यक बहुमत के प्रकार</u>

- नए राज्यों का प्रवेश/स्थापना (अनुच्छेद 2)
- नए राज्यों का गठन और मौजूदा राज्यों की सीमा और नाम में परिवर्तन (अनुच्छेद 3)
- दूसरी अनुसूची (वेतन, भते और विशेषाधिकार)
- राज्यों में विधान परिषद् का गठन/उत्सादन (अनुच्छेद 169)
- संसद में गणपूर्ति (अनुच्छेद 100)
- संसद सदस्यों का वेतन और भत्ता (अनुच्छेद 106)

- संसद की प्रक्रिया के नियम (अनुच्छेद 118)
- संसद में अंग्रेजी का उपयोग
- सर्वोच्च न्यायालय में जजों की संख्या

प्रश्न. निम्न में से किस संवैधानिक संशोधन द्वारा मिजोरम को राज्य का दर्जा दिया गया था -

A. 54 वाँ B. 55 वाँ
C. 52 वाँ D. 53 वाँ
उत्तर – D

साधारण बहुमत

- संसद, उसके सदस्यों और समितियों के विशेषाधिकार (अनुच्छेद 105)
- सर्वोच्च न्यायालय की अधिकारिता में वृद्धि (अनुच्छेद 138)
- आधिकारिक भाषा का उपयोग (अनुच्छेद 343)
- नागरिकता (अनुच्छेद 5-11)
- संसद और राज्य विधानसभाओं के चुनाव
- निर्वाचन क्षेत्रों का परिसीमन (अनुच्छेद 82)
- छठवीं अनुसूची (अनुच्छेद 244)
- केंद्र शासित प्रदेश
- पांचवीं अनुसूची [अनुच्छेद 244 (1)]

विशेष बहुमत

- मूल अधिकार
- राज्य के नीति निदेशक तत्व
- वे सभी प्रावधान जो अन्य 2 प्रकारों में शामिल नहीं हैं।

संसद का विशेष बहुमत आधे + राज्यों की सहमति

- राष्ट्रपति का निर्वाचन और निर्वाचन की रीति (अनुच्छेद 54, 55)
- केंद्र और राज्यों की कार्यकारी शक्तियों में विस्तार
- सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालय (अनुच्छेद 124 और 214)
- केंद्र और राज्यों के बीच विधायी शक्तियों का वितरण
- सातवीं अनुसूची (अनुच्छेद 246)
- संसद में राज्यों का प्रतिनिधित्व
- अनुच्छेद 368

प्रश्न. संविधान संशोधन (91वें) अधिनियम, 2004 के अनुसार राज्य मंत्रिपरिषद् की अधिकतम संख्या क्या होनी चाहिए?

A. विधानसभा की कुल सदस्यों का 10%
B. विधानसभा की कुल सदस्यों का 12%
C. विधानसभा की कुल सदस्यों का 15%
D. विधानसभा के कुल सदस्यों का 20%
उत्तर - C.

हालिया संविधान संशोधन

99वां संशोधन 2014	राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग
100वां संशोधन 2015	भारत और बांग्लादेश के बीच सीमा क्षेत्र में कुछ भू-भागों का आदान-प्रदान
101वां संशोधन 2017	1 जुलाई 2017 से वस्तु एवं सेवा कर को लागू किया जाना
102वां संशोधन 2018	राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा
103वां संशोधन 2019	103वें संशोधन के माध्यम से आर्थिक रूप से पिछलड़े वर्गों के लिए 10% आरक्षण ।
104वां संशोधन 2020	लोकसभा और राज्य विधानसभा में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षण की समय सीमा में वृद्धि
105वाँ संशोधन 2021	राज्य सूची और पिछड़े वर्गों की पहचान करने और उन्हें अधि सूचित करने की राज्यों की सक्ति की राज्यों की शक्ति को संरक्षित किया ।

81 वां संशोधन (2000) : अनुच्छेद 16 की किसी भी व्यवस्था के अधीन अनुसूचित जातियों ओर अनुसूचित जनजातियों की खाली सरकारी पद आरक्षित है। यदि वे नहीं भरे जाते है तो अगले वर्ष पृथक समझी जायेगी।

83 वां संशोधन (2000) : इसके अन्तर्गत 243 ए में संशोधन कर व्यवस्था की गई है कि अरुणाचल प्रदेश में अनुसूचित जातियों के लिए पंचायतों में आरक्षण करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि अरुणाचल पूर्ण रूप से अनुसूचित जातियों से आबाद है।

84 वां संशोधन (2001) : इसमें 1991 की जनगणना के अनुसार सुनिश्चितकी गई आबादी के आधार पर प्रत्येक राज्य केलिए आबंटित लोक सभा व विधान सभा सीटों की संख्या में परिवर्तन किये बिना राज्यों के निर्वाचन क्षेत्र को परिवर्तित व पुनर्गठित किया जा सके ।

85 वां संशोधन (2001) : इस कानून द्वारा संविधान के अनुच्छेद 16 (4a) में संशोधन किया गया है ताकि अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के सरकारी कर्मचारियों को आरक्षण नियमों के तहत पदोन्नति के मामले में आनुषंगिक वरीयता प्रदान की जा सके। इसे 17 जून 1995 से प्रभावी माना गया है।

87 वां संशोधन (2002) : 6 वर्ष से 14 वर्ष तक के बच्चों को शिक्षा का मौलिक अधिकार दिया गया है इसमें अनुच्छेद 21 जोड़ा गया है, जिसके तहत 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों की शिक्षा मुफ्त व अनिवार्य बना दी गई है।

89 वाँ संशोधन (2003) : 89वें संविधान संशोधन द्वारा अनु. 338 में संशोधन किया गया है और एक नया अनु. 338क जोड़ा गया है। अनु. 338 में संशोधन करके अनुसूचित जातियों के लिए एक आयोग की स्थापना का उपबन्ध किया गया है। अनु. 338 के हाशिए के शीर्षक के स्थान पर "राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग" रखा जाएगा।

91 वां संशोधन : मंत्रीपरिषद् में प्रधानमंत्री सहित **मंत्रियों की कुल संख्या सदन के सदस्यों की कुल संख्या के 15 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिये।** यह व्यवस्था राज्यों के लिए भी लागू है। बशर्ते कि राज्य में मंत्रियों की कुल संख्या मुख्यमंत्री सहित 12 से कम न हों।

92 वां संशोधन (2003) : इस संशोधन द्वारा संविधान की 8वीं अनुसूची में संशोधन करके 4 भाषाओं को राजभाषा के रूप में जोड़ दिया गया है जो इस प्रकार है- **बोड़ो, डोंगरी, मैथिली और संथाली ।** इसके पश्चात् 8वीं अनुसूची में अब **कुलभाषाओं की संख्या 22 हो गई है।**

93 वां संशोधन (2005) : शिक्षा संस्थानों में अनुसूचित जाति जनजाति और अन्य पिछड़े वर्गों के नागरिकों के दाखिले के लिए सीटों में आरक्षण की व्यवस्था है।

94 वां संशोधन (2006) : मध्य प्रदेश पुनर्गठन अधिनियम, 2000 और बिहार पुनर्गठन अधिनियम, 2000 द्वारा झारखण्ड और छत्तीसगढ़ दो नए राज्य बनाए गए हैं। छत्तीसगढ़ और झारखण्ड राज्यों के पुनर्गठन के परिणामस्वरूप बिहार और मध्य प्रदेश का सम्पूर्ण अनुसूचित क्षेत्र झारखण्ड में स्थानान्तरित कर दिया गया है। अतः इस संशोधन / अधिनियम द्वारा अनुच्छेद 164 के खण्ड (1) में बिहार राज्य के स्थान पर छत्तीसगढ़ और झारखण्ड शब्दों को रखा गया है ।

95 वां संशोधन (2009) : इस संशोधन द्वारा संविधान के अनुच्छेद 334 में संशोधन करके शब्दावली 60 वर्ष के स्थान पर शब्दावली 70 वर्ष जोड़ दिया गया है अर्थात् अब इन वर्गों के लिये लोकसभा और राज्य विधान सभाओं में आरक्षण 70 वर्ष तक अर्थात् 2010 के पश्चात् तक चलता रहेगा।

96 वां संशोधन (2011) : आठवीं अनुसूची की 15वीं प्रविष्टि में उड़िया की जगह ओडिया शब्द स्थापित किया जाता है। 97वा संशोधन (2011) : भारतीय संविधान के भाग 3 के अनुच्छेद 19 (1) (ग) में

'सहकारी समितियाँ शब्द जोड़ा गया है। । अब अनुच्छेद 19 (1) (ग) के अनुसार, सभी नागरिकों को संगम या संघ या सहकारी समितियां बनाने का अधिकार होगा।

97 वा संशोधन (2011) : भारतीय संविधान के **भाग 3 के अनुच्छेद 19 (1) (ग) में सहकारी समितिया शब्द जोड़ा गया है** अब अनुच्छेद 19 (1) (ग) के अनुसार, सभी नागरिको को संगम या संघ या सहकारी समितियाँ बनाने का अधिकार होगा
संविधान के भाग 3 (राज्य की निति के निदेशक तत्व) में अनुच्छेच्द ख जोड़ा गया है, नए अनुच्छेद 43ख के अनुसार, राज्य सहकारी समितियाँ के स्वेच्छिक गठन, लोकतान्त्रिक नियंत्रण तथा व्यावसायिक प्रबंधन को विकसित करने का प्रयास करेगा।"

प्रश्न. 2012 में भारत के संविधान में होने वाले 97 वें संशोधन का सरोकार किस विषय से है?

A. 14 वर्ष तक के बच्चों को अनिवार्य व निःशुल्क शिक्षा

B. सरकारी संस्थाओं का गठन व कार्य संचालन

C. आतंकवाद से निपटने हेतु कठोर प्रयास

D. भ्रष्टाचार रोकने हेतु लोकपाल की व्यवस्था

उत्तर - B

भारत में पंचायती राजव्यवस्था

भाग-9 पंचायत Part IX The panchayat (क से ण) तथा अनुसूची 11 में प्रावधान किया गया है।
पंचायती राज का शुभारम्भ स्वतंत्र भारत में 2 अक्टूबर, 1959 ई. को भारत के प्रथम **प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू** के **द्वारा राजस्थान राज्य के नागौर जिला में** हुआ। **इसके बाद 1959 में आन्ध्रप्रदेश में पंचायती राज शुरू हुआ।**

पंचायती राज के सम्बन्ध में संवैधानिक प्रावधान

संविधान के अनु. 40 में राज्यों के गठन का निर्देश दिया गया है इसके साथ ही संविधान की 7वीं अनुसूची (राज्य सूची) की प्रविष्टि 5 में ग्राम पंचायतों को शामिल करके इसके सम्बन्ध में कानून बनाने का अधिकार राज्य को दिया गया है।

73 वाँ संविधान संशोधन

73 वाँ संविधान 1993 संशोधन की प्रमुख बातें

1. इसके द्वारा पंचायती राज के त्रिस्तरीय ढाँचे का प्रावधान किया गया है

- ग्राम या नगर पंचायत
- तहसील पंचायत
- जिला पंचायत

2. पंचायती राज संस्था के प्रत्येक स्तर में एक तिहाई स्थानों पर महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था की गयी है
3. ग्राम पंचायत का कार्यकाल 5 वर्ष तक के लिये होता है। यह अनुसूची संविधान में 74वें संवैधानिक संशोधन (1993) के द्वारा जोड़ी गई है। इसमें शहरी क्षेत्र की स्थानीय स्वशासन संस्थाओं को कार्य करने के लिए 18 विषय प्रदान किए गए हैं। इसके द्वारा **संविधान के भाग 9 (क) अनुच्छेद 243 (त से य छ तक)** एवं **12वीं अनुसूची का प्रावधान किया गया** है। 74वाँ संविधान संशोधन की प्रमुख बातें -

नगरपालिकाएँ तीन प्रकार की होगी -
1. **नगर पंचायत** : ऐसे ग्रामीण क्षेत्र जो नगर क्षेत्र में परिवर्तित हो रहा है।
2. **नगर परिषद** : छोटे नगर क्षेत्र के लिए
3. **नगर निगम** : बड़े नगर क्षेत्र के लिए

Note: **नगर निगम की स्थपना सर्वप्रथम मद्रास 1687 ई. में की गयी है।**

राष्ट्रीय दल का दर्जा हासिल करने के लिए आवश्यक शर्ते :

1. लोक सभाआम चुनाव अथवा राज्य विधान सभा चुनाव में किन्हीं चार अथवा अधिक राज्यों में कुल डाले गए वैध मतों का छह प्रतिशत प्राप्त करना जरुरी होगा।
2. इसके अलावा इसे किसी एक राज्य अथवा राज्यों से विधान सभा की कम से कम चार सीटें जीतनी होंगी।
3. लोक सभा में दो प्रतिशत सीटें हों और ये कम से कम तीन विभिन्न राज्यों में हासिल की गयी हों।

अध्याय – 18

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग **एक विधिक निकाय** है, **परंतु यह एक संविधानिक निकाय नहीं है। इसकी स्थापना 1993 में मानव सुरक्षा अधिकार कानून के तहत की गई थी।** मानवाधिकार की रक्षा करना इस आयोग का प्रमुख कार्य है। भारतीय नागरिकों को संविधान के द्वारा जो मूल अधिकार दिये गये हैं उसकी रक्षा करना इसका प्रमुख कर्त्तव्य होता है।

आयोग का गठन

1. आयोग बहुसदस्यीय है **जिसमें एक अध्यक्ष एवं पाच सदस्य होते हैं।**
2. इसका अध्यक्ष उच्चतम न्यायालय का सेवानिवृत न्यायाधीश होनी चाहिए।
3. अन्य सदस्यों में सुप्रीम कोर्ट के तथा हाई कोर्ट के सेवानिवृत न्यायाधीश इसके सदस्य हो सकते हैं।
4. दो ऐसे व्यक्ति जिन्हें मानवाधिकार कानून का व्यवहारिक ज्ञान हो। इसके सदस्य हो सकते हैं।
5. इसके अलावा राष्ट्रीय पिछड़ा आयोग, अल्पसंख्यक आयोग, जातीय / जनजातीय आयोगों के अध्यक्ष इसके स्वत: सदस्य होते हैं।
6. अध्यक्ष एवं सदस्यों की नियुक्ति राष्ट्रपति के दिशा निर्देशों पर होता है।
7. इस नियुक्ति कमेटी में लोकसभा का स्पीकर, राज्यसभा का उपाध्यक्ष, विपक्ष का नेता और गृह मंत्री शामिल होते है
8. **अध्यक्ष का कार्यकाल 3 वर्षों तक होता है। या वह अधि कतम 70 वर्ष की आयु तक पद धारण कर सकता है।**

पुन : नियुक्ति के लिए पात्र हैं।

9. अध्यक्ष एवं सदस्य यह पद धारण करने के बाद केंद्रीय एवं राज्य स्तर पर अन्य किसी पद को धारण नहीं कर सकते।

आयोग के प्रमुख कार्य

1. मानवाधिकारों के उल्लंघन की जांच करना खासतौर पर लोकसेवकों एवं पदाधिकारियों की तरफ से।
2. मानवाधिकार के उल्लंघन के मामले में न्याय दिलवाले के उद्देश्य से न्यायालय का सहारा लेना।
3. समय-समय पर जेलों तथा अन्य स्थानों की छानबीन करना तथा मानवीय अधिकारों को लागू करवाना।
4. मानवाधिकार की रक्षा के लिए संशोधन की सलाह देना ।
5. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समझौता का मूल्यांकन करना।
6. मानवाधिकारों से संबंधित शोध पत्रों को जारी करना तथा लागू करवाना।
7. मानवाधिकारों को आम जनता में लोकप्रिय बनाना तथा जन जागरूकता लाना।
8. वे सभी गैर सरकारी संस्थाएं जो मानवाधिकार के लिए कार्य कर रही है, को प्रोत्साहित करना ।
9. उन सभी कदमों को उठाना जिसके तहत मानवाधिकारों की रक्षा की जा सके।

सारांश

- राष्ट्रीय मानवधिकार आयोग, एक सांविधिक (संवैधानिक नहीं) निकाय है। इसका गठन संसद में पारित अधिनियम के अंतर्गत हुआ था, जिसका नाम था, मानवाधिकार संरक्षण अधिनियम, 1993 ।
- यह आयोग देश में मानवधिकारों का प्रहरी है अर्थात् संविधान द्वारा अभिनिश्चित या अन्तर्राष्टीय संधियों में निर्मित और भारत में न्यायालय द्वारा अधोरोपित किए जाने वाले जीवन, स्वतंत्रता समता और व्यक्तिगत मर्यादा में संबंधित अधिकार।
- आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा प्रधानमंत्री के नेतृत्व वाली गठित छः सदस्यीय समिति की सिफारिश पर होती है समिति में प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष राज्यसभा का उपसभापति संसद के दोनों सदनों विपक्षी दल के नेता, एवं केन्द्रीय गृह मंत्री होते हैं।
- आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों का कार्यकाल 3 वर्ष अथवा जब उनकी उम्र 70 वर्ष हो (जो भी पहले) का होता है। ये पुनः नियुक्ति के पात्र हैं।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

1. किस राजनीतिक विश्लेषक ने भारत में एकदलीय व्यवस्था को एक दलीय शासन व्यवस्था अथवा कांग्रेस व्यवस्था कहा है?

A. भीखू पारेख B. पॉल ब्रास

C. ग्रेनविले ऑस्टिंन D. रजनी कोठारी

उत्तर - D

2. निम्न में से कौन भारत मे क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की विशेषताओं को इंगित करते हैं ?

A. क्षेत्रीय राजनीतिक दल, उस क्षेत्र की संस्कृति को प्रदर्शित करते हैं।

B. क्षेत्रीय राजनीतिक दल, मत प्राप्त करने हेतु क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग करते हैं।

C. क्षेत्रीय राजनीतिक दल, राष्ट्रीय दलों के साथ चुनाव के समय गठबंधन करते हैं।

D. क्षेत्रीय राजनीतिक दल, स्वतंत्रता के बाद अस्तित्व में आए हैं।

नीचे दिए गए कूटों की सहायता से सही उत्तर का कथन करें

1. A और B 2. A, B एवं C

3. A, C और D 4. केवल B

उत्तर- B

3. निर्वाचन आयोग द्वारा बनाए गए मापदंडों के अनुसार, किसी राजनीतिक दल को राष्ट्रीय दल के रूप में मान्यता प्राप्त करने के लिए कम से कम कितने राज्य में सीट जितना अनिवार्य हैं ?

A. 3 B. 4

C. 5 D. 6

उत्तर – B

4. निम्न में से कौन सा कार्य केवल एक राजनीतिक दल से संबंधित है न कि दबाव समूह से ?

A. संगठन के लिए धन एकत्रित करना

B. स्वयं के चिन्ह पर चुनाव लड़ना

C. जनसभाएं एवं रैलियाँ करना

D. पम्पलेट्स छापना

उत्तर - B

5. निम्न राजनीतिक दलों पर विचार कीजिए :-

A. डी.एम.के B. सी.पी.आई (एम)

C. ए.जी.पी D. टी.डी.पी

इनके निर्माण का सही क्रम क्या होगा ?

A. 1-2-4-3 B. 1-2-3-4

C. 2-1-4-3 D. 4-3-2-1

उत्तर - A

6. निम्न में से किसने भारत में दलरहित लोकतंत्र का समर्थन किया था ?

A. महात्मा गांधी

B. एम.एन. राय

C. जयप्रकाश नारायण

D. आचार्य विनोबा भावे

उत्तर- C

7. संसद की कार्य प्रणाली की मूल समस्या क्या है ?

A. प्रभावी दलीय व्यवस्था का अभाव

B. स्वतंत्र एवं कुशल नौकरशाही का अभाव

C. स्पष्ट संवैधानिक प्रावधानों का अभाव

D. विधायिका की स्वतंत्रता का अभाव

उत्तर - B

https://bit.ly/eo-ro-notes

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

VDO Pre. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें।

नोट्स खरीदने के लिए WhatsApp करें

https://wa.link/x3seet

नोट्स Online order करें

https://bit.ly/eo-ro-notes